॥ ॐ ॥

कवि भरोंदासजी अग्रवाल द्वारा रचित

संपादक—

श्री. सेठ सुजानमलजी सोनी

प्रकाशक—

श्री चन्द्रसागर दि. जैन पुस्तकालय

सरावगी मोहल्ला अजमेर।

द्रव्य सहायक—

श्री सेठ पारसमलजी कासलीवाल बलूंदा (मारवाड़)

प्रथमावृत्ती १००० } मिती कार्तिक सुदी १ वीर सं० २४७७ विक्रम समत् २००७ { पूजन प्रचार

ाणकों की दिव्य
ग्रों को असीम
ा भूत सम्यक्त्व
ा कल्याणकों की
ायों ने सुन्दर
परिणामों की
कल्याणक पूजा
ा किये हैं, वे
ने ऐसी सुन्दर
र्य किया है।
यह प्रकाश

बी.ए. विशा

८। २।०८

परम पूज्य १०८ आचार्य श्री नमीसागरजी महाराज मार-वाड़ प्रान्त में विहार करते हुये वलूंदा पधारे, वहां श्री पारसमलजी कासलीवाल की माताजी के यहां पूज्य आचार्य श्री का आहार हुवा, उस हर्षोपलक्ष्य में आपने २५०) जिनवाणी प्रचार के लिये प्रदान किये। अतः उन्हीं की ओर से यह पूजा मेरे पूज्य काकाजी साहब श्रीमान् सुजानमलजी सोनी द्वारा संग्रहित तथा सम्पादित होकर प्रकाशितकी गई है। प्रकाशनकार्य में तथा प्रूफ संशोधन में श्रीयुत पं० हेमचन्दजी शास्त्री ने जो योग दिया, उसके लिये मैं उनका आभारी हूं।

आशा है धार्मिक समाज इस प्रकाशन से लाभ उठावेगी।

भवदीय-शिखरचन्द सोनी

मंत्री-श्री चन्द्रसागर दि० जैन पुस्तकालय अजमेर।

❀ श्री जिनाय नमः ❀

❀ पंच कल्याणक पूजा ❀

➳ मंगला-चरण ➳

दोहा—वंदो पांचों परम पद, सुवुधि सिद्धिदातार।
विघन हरण मंगल करण सुख समाज करतार ॥१॥

सवैया—मंगल को अर्थ पापनास, पुण्य को उपाव सोई पंचपद वृषभादि नाम गायेते। थापन्मति विंब तासुदर्ष चिन्मूरत फुनि विद्यमान विदेह खेत कल्याणक भायेते। कृते श्रुत जिनागार कृत्रिम अकृत्रिम जो काल समै कल्याणक पर्व तिथि पायेते। भाव भक्ति चिंतरन तत्व वीतराग चरण दान पूज सामायिक व्रत तप लायते ॥ २ ॥ दोहा—यातैं श्री वृषभादि की स्तवन सु पूजन ध्यान। सर्वोतम सब विघन में सेवो भवि सुख खान ॥ ३ ॥ पद्धडी छंद ॥ जय जय जय श्री ब्रह्मा महेष, शंकर शंभू जगदीश शेष। जय बुद्धि विदांबर विष्णु ईश। जय जिष्णु त्रिदोसमगण ऋषीश ॥ ४ ॥ जय हरी जितांतक धर्मराज, जय खेचर दुर्जय अतुल बाज। जय सुज्ञ धनंजय स्वयं बुद्ध, जय विभू कलाधर शशि निरुद्ध ।५ जय मिथ्या तिमिर प्रचंड सूर, जय कर्मदवानल मेघ भूर।

जय निरारेक आनंद-सिधु, गत राग रूष अलौकीक बंधु ।६।
जय सुनय केवली परम इष्ट, जग जेष्ट, पितामह महा शिष्ट ।
जय स्वयं जोति जग पति वरिष्ट, सरवज्ञ स्वयंभू अति गरिष्ट
॥ ७ ॥ जय दया ध्वजी निकलंक देव, वरधर्मो व्यापी सर्व-
मेव । जय अनेकान्त आत्मक सरुप, जय वेद निरुपम चित
अनूप ॥ ८ ॥ जय मृत्युंजय शिव रमाकंत, गणपति गण-
नायक परम संत । जय गुणरत्नाकर माधवेस, जय सुगत
सदोदय विश्वभेस ॥९॥ जय वृषाधीस श्रीमान पूज्य, वागीस
अमर अज सुनिध भूज्य । जय परम निरंजन निकल नित्य,
अविरुद्ध वचामृत सकल स्वस्त्य ॥ १० ॥ जय अव्यय अति
ईश्वर अलख, जय एकानेक अधार स्वच्छ । जय जगति शिरा-
मणि चिद्विलास, कृत कृत्य निरोपम अखिलरास ॥ ११ ॥
जय निर आमय अनमित प्रकास, जय लोकालोक विलोक
ग्रास । जय केवल मूरत रहित संग, जय घाति अघाति घात
चंग ॥ १२ ॥ जय पर्म शर्मनिधि लोक शीस, जय मर्म भर्म
हत विश्व ईस । जय सब विघेश्वर लंब हाथ, जय तीर्थंकर
जिनप्रभू नाथ ॥ १३ ॥ जय सुधी सनातन धर्म चक्रि, जय
चतुरानन चदु वेद वक्रि । जय भुवनेस्वर अनवस्थ भूप,
साकार निराकार स्वरूप ॥ १४ ॥ जय परमानन्द जिनेन्द्र
चन्द्र, जय प्रवचन आप्तसु रहित फंद । जय ऋद्धि समृद्धि
विवृद्धि कार, जय वस्तु यथारथ सिद्धिकार ॥ १५ ॥ इत्यादि

अनंत गुणात्मसार, सुर गुरू आदिक नहि लहत पार, मैं महामंद मति कहूं काह, जय जय जय जय श्री जिन अगाह ॥ १६ ॥ दोहा ॥ इह गुण माला कंठधरि, पढे राग जुत सोय । ताके सुर नर नाग पद, सुलभ अंत शिव होय ॥१७॥ मंडल मध्ये पुष्पांञ्जलिंक्षिपेत् ॥

समुच्चय पूजा-स्थापना

दोहा—श्री वृषभादि जिनेशवर, चरम वीर चौवीस ।
आय तिष्ठ मम संन्निहित, कृपासिंधु जगदीस ॥

ॐ ह्रीं श्री पंच कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनाः । अत्रावतरत अवतरत संवौषट् । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्

मुनिमन सम उज्वल नीर शीत सुगंध धरै, त्रयधार चरन ढिग कीर, त्रिविधाताप हरै । श्री वृषभ आदि चौवीस आनंद कंद सही, ध्यावत सुरनर खगईश पावत मोक्ष मही ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि वीरांते भ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन कर्पूर मिलाय केसर संग घसे, तव चरनन देत चढाय भवतन दाघनसे । श्री वृषभ० । चदनम् । तंदुल मुक्ता उनहार वर्जितखंड खरे, ढिग पुंज धरे भवपार अक्षय पद सुवरे ॥ श्री वृषभ० ॥अक्षतं॥ मन नयन घ्राण सुखकार,

कमलादिक प्यारे, ल्यावत ढिग काम पुकार भाग्यो डरमारे। श्री वृषभ० ॥ पुष्पं ॥ षटरस पूरित नैवेद्य सद्य सुगंध लसै, तुम चरण चढ़ोंडें खेद इच्छा भूख नसै ॥ श्री वृषभ० ॥ नैवेद्यं ॥ तम नासक दीप प्रकाश कर्पूरादि लये, ढिग धारत ज्ञान उजास मिथ्या तिमिर जये ॥श्री वृषभ०॥ दीपं॥ कृष्णा गर तगर उसीर चंदन धूप किये, खेयें चरनन ढिग पीर कर्म सबै नसिये ॥ श्री वृषभ० ॥ धूप ॥ फल पक्क मधुर सुर साल दाड़िम मोचसही, ढिग धारत भाल विसाल द्यो मुक्त शिव अब ही ॥ श्री वृषभ०॥ फलं॥ यह मंगल अर्घ निमित्त मंगल द्रव्य लियो, आठौं से हो भय भीत यातैं सेवकियो॥ श्रीवृषभ आदि चौबीस आनंदकंद सही। ध्यावत सुरनर खग ईस पावत मोक्ष मही ॥ अर्घ्यम् ॥ जयमाला ॥

दोहा—गर्भादिक मंगल किये, इन्द्रादिक सब आय। लोकालोक विलोकिकै सिद्ध निरंजन थाय।१। छंद तामरस ॥ जय श्री वृषभ नाथ वृष करता, जय श्री अजित अजित मद हरता। जय संभव भव कारन नासन, जय अभिनंदन अभिमत शासन ॥ २ ॥ जय श्री सुमति सुमत मत दाता, जय पद्माभ जगत विख्याता। जय सुपार्श्व भव फांस विदारी, जय चंद्र प्रभ शशि दुति हारी ॥ ३ ॥ जय श्री सुविध अविध सत भंजी, जय शीतल वच जन मन रंजी। जय श्रेयांस श्रेय दातारं वास पूज्य विद्रुम दुतिसारं ॥ ४ ॥ विमल विमल गुण

जग विस्तारं, जय अनंत गुण अतुल अपारं। धर्मनाथ जिन धर्म प्रकाश्यो, शांति शांति शिव मार्ग विकाश्यो ॥५॥ कुंथु कुंथु आदिक प्रति पालक, अर अरिवसु कर्म ध्यान प्रजालक। मल्लि महामल्ल काम निवारक, मुनिसुव्रत व्रत दुर्गति तारक ॥ ६ ॥ जय श्री नमिजिन नमत सुरासुर, नेमनाथ रथ धर्म चक्र धुर। जय श्री पार्श्व सार्श्व गुण धारी, जय श्री वर्द्धमान अविकारी ॥ ७ ॥ घत्ता ॥ चौवीस जिनंदा त्रिभुवन चंदा, आनंद कंदा भवफंदा। जय पाप निकंदा हे गुण वृंदा, करहु अफंदा मम वृंदा ॥ महार्घ्यं ॥

गर्भ कल्याणक पूजा स्थापना।

सवैया ॥३१॥ पूरब जन्म भावना षोडस भाइजु तीर्थ प्रकृति दातार, फुनि इन्द्रादिक पद सुख लहि चय आये जम्बूद्वीप मझार। दक्षिण भरत क्षेत्र आरज में गर्भ मात के नगर सुभाय, वृषभ आदि श्री वीर चरम जिन सो प्रभु तिष्ठो अत्र सु आय।

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति जिनेन्द्रा अत्रावतरत अवतरत (संवौषट्) अततिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

छंद बरवा। क्षीरो दधि सम प्राशुक उत्तम नीर, रतन कटोरी धारदेत हरपीर हो भवि पूजो ध्यावो भावसों। श्री जिनपत चौवीसकों, भवि पूजो ध्यावो भावसों॥

ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चंदन कदली नंदन ल्याय, घसिजल निरमल चरणन देत चढाय। हो भवि पूजो ध्यावो भावसों, श्री जिन-पत चौवीस को भविपूजो ध्यावो भावसों। चंदनं॥ बासमती सुखदास अखंडित ल्याय, धारत पुंज अखै निधि आतम थाय। हो भवि०॥ अक्षतं। कमल केतकी बेल चमेली ल्याय, चरणन आगें धारत काम नसाय हो भवि०॥पुष्पं॥ घेवर बावर खाजे तुरत बनाय, धारत ही ढिग क्षुधा वेदनी जाय। हो भवि०॥ नैवेद्यं॥ जगमग जगमग दीप होत परकाश, धारत चरणन आगें ज्ञान विकाश॥ हो भवि०॥ दीपं॥ अगर तगर कृष्णागर आदिक द्रव्य सुगंध मिलाय, श्री जिनवर के चरणन आगे खेवत करम नसाय। हो भवि० ॥ धूपं॥ लोंग सुपारी श्रीफल आदि मंगाय, पूजत श्रीजिन मनवांछित फल पाय। हो भवि०॥फलं॥ जल फल प्राशुक मंगल बसुद्रविलाय, अर्घ उतारत जय जय जय जिनराय॥ हो भवि०॥ अर्घ्यं॥

चौपाई॥ सरवारथ सिधितैं अहमिंद, मरुदेवी उर नाभि नरिंद। नगर अजोध्या कृष्ण सुदोज, मास अषाढ वृषभ जिन कोज।

ॐ ह्रीं अषाढ कृष्ण द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री ऋषभ जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १ ॥

जेठ अमावस अजित जिनेश, विजया उर जितशत्रु नरेश।
आये वैजयंत सु विमान, नगर अजोध्या मंगल थान॥

ॐ ह्रीं जेष्ट मावस्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अजित जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ २ ॥

चय ग्रीवक फाल्गुण सित जानो, आठैं द्रिढरथ तात बखानो।
सेना मात नगर सावित्री, संभव जगत कियो सु पवित्री॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण शुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री संभव जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ३ ॥

विजय विमान अजोध्य आय, सिद्धारथ उर संवर राय।
सुदि वैशाख छट्टि दिन जान, श्री अभिनंदन गर्भ प्रमान॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल षष्ट्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अभिनंदन जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ४ ॥

श्रावण सुदि की दोज अनूप, चये जयंत मेघ प्रिय भूप।
मात मंगला नगर अजोध्य, सुमति जिनेश जगत प्रति बुध्य॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री सुमति जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ५ ॥

ऊपर ग्रैवेयकतैं आय, धारण तात सुसीमा माय।
नगर कोसंबी पद्म जिनेश, माघ कृष्ण षष्टी नुत शेश॥

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ६ ॥

चय ग्रैवेयक मध्य विमाण, भादव सित षष्ठी दिन जान।
सुपरतिष्ठ पृथवी दे माय, बाणारसि सुपार्श्व जिनराय ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्रीसुपार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ७ ॥

वैजयंत जय चंद जिनेश, चंद पुरी महसेन नरेश।
मात सुलक्षणा गर्भ मझार, चैत वदी पांचैं निरधार ॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण पञ्चम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ८ ॥

आरण स्वर्ग चये जिनराय, पुष्पदंत रामा दे माय।
कहिकिंधा सुग्रीव नरेश, फागुण बदि नौमी निशिसेश ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ९ ॥

अच्युत स्वर्ग सुनंदामाय, भद्दलपुर शीतल जिनराय।
द्रिढरथ तात जगत विख्यात, चैत्र असित अष्टमि की रात ॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री शीतल जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १० ॥

पुष्पोत्तर चय विमला देवी, सिंहपुरी सुर देवी सेवी।
श्री श्रेयांस विमल गृह आये, जेठ असित छठि मंगल गाये ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णषष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांस जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ ११ ॥

महाशुक्रतैं चये जिनेश, वासु पूज्य वसु पूज्य नरेश ।
विजया मात चंपा पुरथान, छट्ठ अषाढ असित भगवान ॥

ॐ ह्रीं आषाढ कृष्णषष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १२ ॥

सहश्रारतैं विमल जिनेश, कंपिल्लाकृत धर्म नरेश ।
मात सुरीमा गर्भमझार, जेठ कृष्ण दशमी दिन सार ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री विमल जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १३ ॥

चय पुष्पोत्तर नगर अजोध्या, सिंघसेन नृप सूर्य्या सुध्या ।
कार्तिक असित अनंत जिनेशा, प्रतिपद पूजत सकल सुरेशा ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अनंत जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १४ ॥

चय सर्वारथ राजलपुरी, मात सुब्रता गुण सुंदरी ।
राजा रत्न धर्म जगदीश, आठैं सुदि वैशाख जगीस ॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री धर्म जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १५ ॥

तजि सरवारथ सिद्ध विमान, हस्तिनागपुर नगर प्रधान ।
विश्वसेन अइरादे मात, भादव शांति कृष्ण दिन सात ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री शान्ति जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १६ ॥

सरवारथ सिधितैं अहमिंद्र, हस्तिनागपुर सूर्य नरिंद्र।
मात श्रीमती कुंथु जिनेश, श्रावण वदि दशमी निशि शेश ॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्ण दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथु जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १७ ॥

अपरा जित विमान तैं आय, हस्तिनागपुर मित्रामाय।
अरह जिनंद सुदर्शनराय, फागुण सित तजि गर्भ सुभाय ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण शुक्लतृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अर जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १८ ॥

अपराजित विमानतैं आये, मिथुलापुरी कुंभ नृप जाये।
मल्लिजिनेश सुरेशा जननी, चैत सेत प्रति पद अघ हरनी ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री मल्लि जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ १९ ॥

प्राणततैं चय पद्मामात, गर्भ लियो सुह मित्र जुतात।
मुनिसुव्रत जिन सप्तग्रहनग्र, श्रावण असित दूजतिथि अग्र ॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णद्वितीयायां गर्भ कल्याणक प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ २० ॥

छंदपाईता—अपराजिततैं नमि आये, मिथुलापुर विप्रामाये।
विजया राजा विख्याता, अश्वनि वदि दोज सुगाता ॥

ॐ ह्रीं आश्विन कृष्ण द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री नमि जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ २१ ॥

अपराजित नेमि जिनंदा, शौरीपुर शिवा अमंदा ।
तहँ समुद विजय है भूपा, कार्तिक सित छट्ट अनूपा ॥

ॐ ह्रींकार्तिक कृष्ण षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री नेमि जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥ प्राणततैं पारस प्रभू, वाणारसि वैशाख ।
अश्वसेन वामासती, दूज असित जिन भाख ॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्रीपार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ २३ ॥

पुष्पोत्तरतैं वीर जिन, त्रिशला उर आषाढ ।
सिद्धा रथ सित षष्टि दिन, कुंडल पुर सुरठाढ ॥

ॐ ह्रीं आषाढ शुक्ल षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री वर्द्ध-मान जिनेन्द्रायार्घ्यं ॥ २४ ॥

ये दिन गर्भ कल्याण के, पूजत सब सुर आय ।
हम पूजत वसुदर्व अब, उच्छव मंगलगाय ॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

जयमाला

॥ दोहा ॥ वृषभ आदि चौवीस जिन, गर्भकल्याणकसार। ताको कछु वरनन करौं, भक्ति भाव उरधार ॥ १ ॥

॥तोटक छंद॥ पहिले षट मास रहे जवही, तब इन्द्रसु प्रथम विचार सही। छह मास सु आयु रही जिनकी, तुम धनपति जाय करो विधकी ॥ २ ॥ तब आय कुवेर सु नग्रिरची, कनका रतनामय सोभ मची। वरषा नृप आंगण मैं नितही, अध तीन किरोड सु रत्न लही ॥३ ॥ तिहि देखत जीव मिथ्यात गये, जिन महिमातैं सम्यक्तठये। पुन आईय गर्भ जिसी दिनजी, तव मात सु स्वप्न लई इमजी ॥ ४ ॥ नगराज वृषभ गजराज लख्यो, जुगमीन सरोवर सिंधु अख्यो। जुगमाल सु कुंभ हरी कमला, शशि सूर्य धनंजय निर्धुमिला ।५ हरिपीठ भवन धरणेन्द्रकही, सुरराज विमान ए सोल कही। उठ मात सु प्रात क्रिया करिकैं, पतिपैं विरतंत कह्यो निशिकैं ॥ ६ ॥ तब अवधि सु ज्ञान विचार कहे, तुव गर्भ जिनेश्वर आनलहे। सुनदंपति मोदभरी अति ही, फुनि आसन कंप भई चव ही ॥ ७ ॥ तब आय सु सप्त समाज लिये, जिन मातरु तात सनान किये। पुन पूजि जिनंद सु ध्यान करी, निज पुन्य उपाय गये सुघरी ॥८॥ सुर देवि सु सेव करें नितही, जिन मात रमावन की चित ही। केइ ताल मृदंग सु वीन

लिये, मुरचंग अनेक सु नृत्य किये ॥ ९ ॥ इम षट् पचास कुमारि करैं, अपने अपने कृत चित्त धरैं। इन आदि अनेक नियोग भई, कहि कौन सके मैं मंद धि ई ॥ १० ॥ तुमरो इक नाम अधार हिये, अनुरै सब जाल वृथा गनिये। तिसतैं अब नाथ कृपा करिये, भव संकट काट सुधा भरिये ॥११॥

॥ सोरठा ॥ गर्भकल्याणक मांहि, महिमां श्री जिनराज की, देखत पातिक जांहि, तातैं निशदिन ध्यावहू ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि विरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म कल्याणक पूजा स्थापना

छंद त्रोटक ॥ जिनराज को जन्म सुजान हरी, नुतआय सु लेय गयो गिररी। तित जन्म नियोग कियो सगरी, तिन्ह थापतु हौं त्रय वारुचरी।

ॐ ह्रीं जन्म कल्याणक प्राप्ताः श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनेन्द्रा अत्रावतरत अवतरत (संवौषट्) अततिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

॥ छंद त्रिभंगी ॥ पद्मद्रह नीरं गंध गहीरं, तर्जित सीरं हरिपीरं, भृंगार सुधारा नाल सुधारा देत सुधारा सुखसीरं ॥ चौवीस जिनेशं हरति कलेशं नमत सुरेशं चक्रेशं, तुम पूजन आयो शीस नमायो तारि तारि हे खग्गेशं ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक पूर्णमास्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री संभव जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

अभिनंदन को जन्म माघ सित जानिये,
द्वादसि कंचन वरण चिन्ह कपि मांनिये।
धनुष अर्द्ध शत तीन उचाई तन लसै,
आयु लाख पंचास पूर्व जजि शिव बसै ॥

ॐ ह्रीं माघ शुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री अभिनंदन जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

चैत्र शुक्ल तिथि रुद्र संख्य श्री सुमतिजी,
लयो जन्म तन हेमवरण गुन वृंदजी।
आयु लाख चालीस पूर्व ग्रंथन कही,
कोकचिन्ह वपु धनुष तीन शत की लही ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री सुमति जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

पद्म चिन्ह पद पद्म पद्म तन दुतिलसै,
पद्म जिनेश्वर पाद पद्म पद्मा वसै।
आयु तीस लख पुव्व त्रयोदशि शुक्ल ही,
कार्तिक चाप अढाई शत वपु उच्च ही।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

जेठ सेत तिथि अर्क प्रमित जिन जन्मये,
नाथ सुपारस हरित वरण जन सुखठये।

आयु पूर्व लख वीस चिह्न स्वस्तिक लये,

धनुष दोय शत उच्च काय जजि हर्षिये ।।

ॐ ह्रीं जेष्ठ शुक्ल द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

चंदवरण जिनचंद चिह्न पग चंद ही,

चंद्रादिक सुरवृन्द नमत जिन जन्म ही ।

आयु लाख दश पुव्व पोष एकादशी,

असित चांप तन डेढ शतक ऊंचीलसी ।।

ॐ ह्रीं पोष कृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

मार्गशीर्ष सित पुष्पदंत जिन जन्मिये,

स्वेतवरण तन उच्च धनुष इक शत ठये ।

आयु लाख दो पुव्व सु प्रतिपद दिन कही,

मकर चिन्ह पग निरखि जजोंमन वच सही ।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

माघ असित द्वादशि श्री शीतल नाथ जु,

जन्म लेत त्रिभुवन में जय जय कारज ।

आयु लाख इक पुव्व कनक तन सोहनों,

नव्वे धनुष उतंगचिन्ह श्री द्रुम गिनों ।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री शीतल जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

जन्मलयो श्रेयांस असित फागुण सही,
तिथि एकादशि मान वरण कंचन कही।
आयु चौरासी लाख वर्ष पग चिन्ह है,
गयँडा अस्सी चांप काय उत्तंग है॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांस जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ११॥

फागुण कृष्ण चतुर्दशि वासव पूजिया,
वासु, पूज्य जिन जन्म अरुन तन हूजिया।
आयु वहतरि लाख वरष धनु सत्तरे,
ऊंची काय प्रमान महिष चिन्ह पगतरे॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री वासु पूज्य जिनेन्द्रापार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२॥

सेत माघ तिथि चोथ प्रमित श्री विमलजू,
लयो जन्म सो विमल करो मम हृदयजू।
आयु वर्ष लख साठ चिहन वाराह को,
हेम वरण उत्तंग धनुप तन साठको॥

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १३॥

कृष्ण जेठकी द्वादशि जन्म अनंतजू,
त्रिभुवन वजत वधाई तासुन अंतजू।
आयु लाख वर्ष तीस चिहन पगहै दसे,
कंचन वर्ण पचास चाप उत्सेह हैं॥

ॐ ह्रीं जेष्ट कृष्ण द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री अनंत-नाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्बयामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

धर्म जिनेश्वर जन्म माघ सित त्रयोदशी,
वज्र दंड पग चिहन धनुप पन चौलसी।
उच्च काय चामीकर वरण सोहावनों,
आयु लाख दश वर्ष जजत तिन अघहनों ॥

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल त्रयोदश्यां जन्म कल्याणक प्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

जेठ असित चौदस श्री शांति जिनंद जी,
लयो जन्म तन हेम वरण सुखकंद जी।
मृग लच्छन पग धनुप उच्च चालीस जी,
आयु लाख एक वर्ष नमों जगदीस जी ॥

ॐ ह्रीं जेष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री शान्ति जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

सित एकम वैसाख कुन्थु जिन अवतरे,
कंचन वरण सुचिन्ह अजा मुख पगधरे।
आयु सहस पंचानवे वर्ष सु गाइया,
धनुष तीस पन उच्च काय सब भाइया ॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल प्रतिपदायां जन्म कल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथु जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

मार्गशीर्ष सित चौदसि अरह प्रभू भये,
सुवरण सुवरण जानि मीन लच्छन ठये।

धनुष तीस उत्तंग काय जिम भांन ही,
आयु चौरासी वर्ष सहस पर मान ही ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री अर जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

अगहन सित एकादशि के दिन मल्लजी,
जन्मलेत सब जीव भये निःसल्लजी ।
हेमवरण उत्तंग धनुष पन वीस है,
आयु सहस पंचास पांच वर्ष कुंभ है ।
ॐ ह्रीं मार्गशीष शुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री मल्लि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

श्री मुनिसुव्रत जन्म दशैं वैशाख ही,
असित पक्ष तन श्यामा वरण श्रुत भाख ही ।
आयु सहस वर्ष तीस चिहन कच्छप धरै,
उन्नत चांप सु वीस काय मन मन हरे ॥
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री मुनि-सुव्रत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

वदि दशैं सु अषाढ नमि जिन अवतरे,
तीन लोक सुरनरा सकल आनंद भरे ।
हेम वरण तन धनुष उच्च दस पन सही,
वर्ष सहस दश आयु चिन्ह पद्मजु कही ॥
ॐ ह्रीं आषाढ कृष्ण दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री नमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥ श्रावण सुदि छठ नेमि जिनंद, स्यामवरण तन लखि आनंद। संख चिहन धनु दश उत्तंग आयु सहस एक वर्ष लहंत ॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री नेमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

पौष कृष्ण एकादशि जन्मे, पारस देव हरितरंग तन मे।
नाग चिहन नव हाथ उचतं, आयु वर्ष एक शतक भनंत ॥

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां जन्म कल्याणक प्राप्ताय श्रीपार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

॥ इंद्रवजा ॥ श्री वर्द्धमानं जिन चैत्र मासे, त्रयोदशी सेत सु हेम वर्णं। उत्तंग हस्ताब्धिस सिह चिन्हं, सप्तति वर्ष मितः सु आयु ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री वर्द्धमान जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

॥ सोरठ ॥ चौवीसूं भगवान नमत सुरासुर पाद जसु। जन्म कल्याणकनाम जजौंअर्घवसुदर्वले।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

जयमाला

॥दोहा॥ जन्म होत जिनराज को, नारकि हू सुखथाय।
औरनि की फुनि का कथा, आनंद उर न समाय॥१॥

॥ छंद जगसार हो ॥ जन्म होत जिनदेव को जगसार हो, बाजे अचरज बाज। कल्पदेव घर घंट जी जगसार हो, ज्योतिष घर हरिनाद। हरिनाद व्यंतर ढोल बाजै भवन के घर शंख ही, इम देखि सुरतब अवधि कीनो जनम जिन निहसंक ही। तब सातडग चल नमन किनौ सैन सात सँवारिया, सो एक एक मैं सात जानों चले जय जय कारिया ॥२॥ ऐरावत तब ही सज्यो जगसार हो, जोजन लाख प्रमाण। बदन एक शत सोहनो जगसार हो, वसुवसु दंत महान। महानरद प्रति एक सरसो सरन सो पन बीस ही, कमलनी कमलनि कमल पच्चिस कमल दल अठसो सही, दल दलहि अपच्छर नृत्य करहि सु हाव भाव संगीत ही, सब भई कोड सु बीस सात सु लिये ताल अभीत ही ॥ ३ ॥ चढि सुरपति पुर आईयो जगसार हो, देय प्रदिच्छणा तीन, सचीजाय जननी ढिगे जगसार हो सुख निद्रा तब दीन, तब दीन बालक मात ढिग माया मयी फुनि जिनलियो, तब ल्याय जिनपति देत सुरपति नमन करिजिन तिन लियो, देखत तृपत नहिं होत इन्द्र सु सहअलोचन तब करी, ईशान इन्द्र सु छत्र धर शिर चमर जुग ऊपर ढरी ॥ ४ ॥ जाय सुमेंद्र गिरेंद्र पय जगसार

हो, पांडुकशिला विशाल शतजोजन लांबी कही जगसार हो अध विष्कुंभ निहार। निहार ऊंची आठ भाखी अर्द्ध चन्द्रा कारही, तापैं सिंहासन कमल आसन पूर्व मुख जिन थाप ही। मेरु ऊपर रच्यो सुरराज बहु विध कलश सहश्र अठोत्तरे, पंचम उदधि जलभरे मणि मय ढके कमलनि सोखरे ॥ ५ ॥ जोजन आठ गहीर है जगसार हो चव जोजन चक रात्र मुख जोजन इकसोहनो जगसार हो, भाख्यो श्री जिन राव जिनराव सुरपति नहवन कीनो अघघ भम भम धार ही। फुनि पोंछि शचि सृंगार कीनो यथा उचित सुधार ही, फिर आय मात जगाय बालक देय नाम कह्यो सही, तब हरष जुत संगीत नृत्य आरंभ कीनो सुरत ही ॥ ६ ॥ नाना विधि को वरण वें जगसार हो देखत अद्भुत थाय, बाजे ताल टंकोर ही जगसार हो वीन बांसुरी गाय। गाय तकिट धकिट सु धुमकिट तकथि लांग मृदंग ही, सारंगी डाडा रासनन नन सो तारडिर्डिंर्हंढग ही, तहंतान लय सुर ग्राम मूर्छन भेद जुत तननन सही चट पट सु अट पट झठ नटत ठठ नृत्य तांडव ठनत ही ॥ ७ ॥ इम बहु पुन्य उपाय ही जग सार हो एक भव धारी होय, धनपति रखि निज थल गयो जगसार हो, बालचन्द्र वृद्ध होय होय वृद्ध सु बाल जिनपति मात उर आनंद लहै, तब देख जुवान विवाह गुरु जन करन प्रति जिनपति कहै, तामें सु जिन उनईस कीनो राज भोग

संजोग ही, तामैं भये त्रय चक्र धर जिन शांति कुन्थु अरह कही ॥ ८ ॥ गृहणी पांच जु नागृहे जग राहो, वासु पूज्य जिनराव, मल्लिनेमि श्री पार्श्वजी जगसार हो, महावीर शिव चाव, शिव चाव जिन त्रय ज्ञान जुत दश जन्म अतिशय सब लहै, इह जन्म कल्याणक सु महिमा थकित है बुधजन रहै, सो अल्पमति मैं कहन उमग्यो कहौं कैसे नाथजी, जिमबाल जल प्रति बिंब चाहै लहैं कैसे हाथजी ॥ ९ ॥ घत्ता ॥ श्री जिन गुणमालं त्रिविध प्रकारं अमल अपारं सुख कारी । जो अहि निशि ध्यावे, पाप नशावे शिव पद पावै दुखहारी ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

तप कल्याणक पूजा स्थापना

॥ छंद रोला ॥ इह संसार असार भावना द्वादश भाई,
लौकान्तिक सुर आय बोध पद पुष्प चढाई ।
चढि शिवका बनजाय, धार्यो प्रभु जोग उदारा ।
सो प्रभु तिष्टो आय करो मम हृदय उजारा ।

ॐ ह्रीं तपः कल्याणक प्राप्ताः श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-जिनेन्द्रा अत्रावतरत अवतरत (संवौषट्) अततिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

प्राणी रेवा पगाज मनोद्भवा, सुंदर सरिनीर सु ल्याय।
प्राणी कंचन भृंग भराईये, दीजै त्रयधार बनाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत सुरशिव थाय।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये ॥

ॐ ह्रीं तपः कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि विरान्तेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

प्राणी अगर तगर कर्पूर ले, मलयागिर संघ घसाय।
प्राणी रतन कटोरी धारिये, दीजे तव चरण चढाय ॥
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत० ॥ चंदनं ॥
प्राणी देव जीर सुखदास के, अक्षत मुक्ता उनहार।
प्राणी त्रिभुवन पति चरणन धरो, अक्षय पद हो ततकाल ॥
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत० ॥ अक्षतं ॥
प्राणी सुमन सुमन के ल्याईये, घ्राणन नयनन सुखकार।
प्राणी श्री जिन चरण चढाईये, निर्मूल समर निरवार ॥
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत० ॥ पुष्पं ॥
प्राणी नेवज षट रससौं भरे, सोरभ जुत बहुविध लाय।
प्राणी क्षुधा वेदनी नासको, जिनपद पद देहु चढाय ॥
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत० ॥ नैवेद्यं ॥
प्राणी दीप ललित सो जगमगे, जगमगे जोति जगाय।
प्राणी श्री जिनपद अर्चन करो, मिथ्या तम मैलान साय ॥
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत० ॥ दीपं ॥

प्राणी धूप दशांग बनाय के, खेऊं जु हुतासन मांहि,
प्राणी अष्ट करम जर धूम्र मिस उड भागे दशदिश जांहि।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये जाके पूजत० ॥ धूपं ॥
प्राणी श्रीफल आदी सुफल लियो, नाना रंगस्वाद अपार,
प्राणी मोक्ष सुफल कारणजजों, दाता लखि औरन टार ॥
प्रणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत० ॥ फलं ॥
प्रणी जलफल आदि सु द्रव्यले, पूंजों गुणगाय बजाय।
प्रणी देहु अनर्घ्यसु पद हमैं, सबलायक हो जिनराय॥
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, जाके पूजत सुरशिव थाय
प्राणी श्री जिनबर पद पूजिये ॥ अर्घ्यं ॥

॥ अडिल ॥ चैत्र बदी नवमी आदीश्वर तप धरो, गजपुर मैं श्रेयांस सुवन पारन करो। दीक्षा वट तरु तले रहे छद्मस्तजी, वरष सहस एक चार सहस नृप संघ जी

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री ऋषभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

सेन माघ नवमी धारो तप अजिनजा, जंबूतरु तल ध्यान सहस नृप संघजी। लियो अहार अयोध्या नृप ब्रह्म-दत्त के, रहे वर्ष छद्मस्त द्विषट पति जनन के।

ॐ ह्रीं माघ शुक्लनवम्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री अजित जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मार्गशीर्ष पूनों दिन संभव नाथजी, साल वृक्ष तल जोग सहस नृप साथजी। कियो पारणो नृप सुरेन्द्र सावित्रि

के, रहे वर्ष छदमस्त चौद पति जनन के ।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष पूर्णमास्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री संभव जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

माघ सुदी एकादशि अभिनंदन लये, सरलू तरु तल ध्यान विनीता पुर गये । दियो दान इंद्रदत्त पंच अचरज भये, अष्टादश छदमस्त वर्ष नृप सहस ये ।

ॐ ह्रीं माघ शुक्लैदादश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री अभिनंदन जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

सुमति नाथ वैशाख सेत नवमी लये, वृक्ष प्रयंगू तलें जोग विजया गये । दिया दान नृप पद्म पंच अचरज भये, वीस वर्ष छदमस्त सहस नृप संगठये ।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल नवम्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

कार्तिक सित एकादशि पद्म प्रभू सही, सहस एक नृप संग प्रयंगू तरू लही । मंगल पुर नृप सोमदत्त घर असन ले, रहे मास छद्मस्त छह जु घातिय गले ।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णे का दश्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

जेठार्जुन द्वादशि नृप एक सहश्र ही, धारी दीक्षा श्री सुपार्श्व तरु सिरसही । पाटल पुर नृप महादत्त के असन ले, रहे वर्ष छदमस्त पांच चव अरीदले ।

ॐ ह्रीं जेष्ठ शुक्ल द्वादश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

पोष असित एकादशि चंद्र जिनंदजी, नाग वृक्ष तल भूप सहस निरफंदजी। पद्म खेट नृप सोमदेव घर क्षीर ले, रहे मास छद मस्त तीज घाती जले।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

पुष्पदंत एकम सित अगहन को धरो, भूप सहस एक संग साल तरु तप करो। पुहुपक नृप पुर सेत सेत जिन सेत ले, रहे मास छदमस्त चार चार जु टले।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदायां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

माघ कृष्ण द्वादशि पलासतरु तपलियो, शीतल नाथ जिनेश सहस्र नृप संग कियो। अरिठ पुनर्वसु भूप सदन के अन्न ले, मास तीन छदमस्त जजों वसु दर्वले।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण द्वादश्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री शीतल जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

फागुण श्याम एका दशि तंदुक तल धरो, श्री श्रेयांस जिनेश सहस्र नृप तप करो। नृप सुनंद पुर इष्ट सुअन के पारणो, मास दोय छदमस्त नमो मल टारणो।

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्णैकादश्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांस जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

वासु पूज्य जिन फागुण श्याम चतुर्दशी, जयां छीय तल जोग भूप सत षट वसी, सिद्धारथ पुर पारण नृप जय के घरे, मास एक छदमस्त जजों तिन अघ हरे।

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण चतुर्दश्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री वासु पूज्य जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

सेत माघ की चोथ विमल जंबू तले, भूप सहस एक संग धरी दीक्षा भले। भूप बिशाख महापुर के पारण करो, मास तीन छद्मस्त जजों मम भव हरो।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल चतुर्थ्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

सुंदरी० ॥ जेठ द्वादशि असित अनंतजी, भूपसहससु पीपल संतजी, धारणपुर नृप धर्म सुसिंह के, पारणोछदमस्त दुमासके

ॐ ह्रीं जेष्ठ कृष्ण द्वादश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

॥ अडिल ॥ धर्मनाथ सित माघ त्रयोदशि तपधरो, दधि पर्णी तरु तले सहस नृप संग करो, मानपुर नृप सुमित्र के पारणों, मास एक छद्मस्त जजों शिव कारणों।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल त्रयोदश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री धर्म नाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

सुंदरी० जेठ असित चतुर्दशि शांतिजी नृप सहस नंदी तरु कांतजी, धर्म मित्र सु मनस के पारने, वर्ष षोडस छद्मस्त जु गनें

ॐ ह्रीं जेष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा ॥ १६ ॥

कुंथु प्रति पद सित राधा गनो, तिलक तरु तल नृप सहसय मनो। नृप पराजित मंदिर असन ले वर्ष षोडश छद्मस्त जु भले।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल प्रतिपदायां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

सेत अगहन दशमी तपधरे, अरह भूप सहस आम्र जु तरे। हस्तिनापुर नंद सुखेन के, पारणों छदमस्त जु पूर्व के।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल दशम्यां तपः कल्याण प्राप्ताय श्री अर-नाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ अडिल ॥ अगहन सित एकादशि मल्लि जु तप धरे, तरु अशोक नृप सत षट छ ऊपर करे। वृषभदत्त नृप चक्र नगर के पारणों दिन छहही छदमस्त जजों दुख नाशनो।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्लेकादश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रयार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

मुनि सुव्रत वैशाख असित दशमी धरे, चंपक तरु तल ध्यान सहस नृप संग खरे। मिथुलापुर नृपदत्त दानपय जिन दिये। रहे मास छदमस्त एकादशि तप किये।

ॐ ह्री वैशाख कृष्ण दशम्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री मुनि सुव्रत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

दशमी असित असाढ नमी जिन तप लियो, मौलसरी तरु तले सहस नृप संग कियो। राज गृही नृप सञ्जय के पारणा करो, गृह परमित छदमस्त वर्ष भव दुख हरो।

ॐ ह्रीं आषाढ कृष्ण दशम्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री नमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥

श्रावण सित षट मेष श्रेणि तरु नेमिजी, धारो तप नृप सहस परिषह सहनजी। लियो अहार सु द्वारावति ब्रदत्त के, दिन छप्पन छदमस्त घोर तप तपन के।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री नेमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

पोष बदी एकादशि श्री पारस लयौ, नृप सत छह छह ऊपर तरु धव तप गह्यौ। लियो अहार सु काम्या कृत नृप धन्य के, मास चार छदमस्त त्रिविध विध तपन के।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां तपः कल्याणक प्राप्ताय श्री पार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

अगहन दशमी श्याम साल तरु तप धरे, वर्द्धमान जिनराय तीन सत नृप खरे। बाहुल नृप पुर कुंड भवन पारणा लये, रह वर्ष छदमस्त दुआ दश तपठये।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष कृष्ण दशम्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री वर्द्ध-मान जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ चौवीसों भगवान के, तप मंगल दिन जोय।
नमो अंग वसु दर्वले, विघ्न निघ्न सब होय ॥

ॐ ह्रीं तपः कल्याणक प्राप्त श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

—: जयमाला :—

सोरठा—जान्यो संयमकाल, तन धन जग सब अथिर लखि। तज्यो सर्व जंजाल, शिव सुख कारी तप धरो ॥ १॥ ॥ रोला छंदा ॥ संयम को लखि काल प्रभू वैराग चितारो, तन धन जोवन रूप विमल सब अथिर विचारो। कोऊ क्षेत्र सु काल दर्व कोउ जीवन ऐसो, जाके शरणां जाय हरे भव संकट तैसो ॥ २ ॥ यह संसार मझार चतुर्गति को दुख भारी, जन्म मरण भयरोग शोग विस्मय पर हारी। सदा एक लो भ्रमैं संगसाथी कोउ नांही, करे आप जो कर्म सहै दुख भव भव मांही ॥ ३ ॥ पुत्र कलित्र जु मित्र मात पितु धन धान्यादिक, परगट दीखे भिन्न मरण मैं देहऊ आदिक। महा अशुचि यह देह सप्त मल मूत्र भरी है, कृमि आदिक बहु जीव तासु तैं नेह धरी है ॥ ४ ॥ सदा कर्मवश परे आपको चेतन कीनो, जैसे उदय जो आय बहुरि फुनि तैसो लीनो। संवर को नहि लभभयो अब ही तक मांहीं, जासो रुके जु कर्म सोइ संजम विनु नांहीं ॥ ५ ॥ कर्म अनंते लगे निर्जरा विनु नहि जांहीं, सो विशुद्ध तैं होय आज लों नांहि लहांही। षट द्रव्यन सों भरो लोक कोउ कर्ता नांहीं, कर्ता हर्ता नाहि भ्रमैं यामैं जिय याही ॥ ६ ॥ दुर्लभ है यह ज्ञान जथारथ सम्यक पाये, विनु सम्यक यह जीव निगो

दा दिक दुख आये। धर्म दया द्वै भेद स्वपर पुन दशधा गाये, वस्तु सुभाव सु धर्म आजलों नांही पाये ॥७॥ इत्यादिक भावना भावते आये देवा, लौकांतिक पद पुष्प चढाय कहैं यह भेवा। धन्य दिवस यह आज धन्य यह घडी भली है, धन्य तुम्हारी बुद्धि धन्य तुम जोग्य यही है ॥ ८ ॥ हम मत मंदी कहा कहैं तुम आप प्रबुद्धी, हम नियोग तैं कहि नमो कहि गये सुबुद्धी। सौधर्मादिक इन्द्र आग पालकी संवारी, प्रभु शृंगार कराय स्वजन ममता निरवारी ॥ ९ ॥ चढे पालकी आप प्रथम लीनो नर राजा, पुन इंद्रादिक देव लेय उद्यान विराजा। उत्तर शुद्ध छिति निरिखि वृक्ष तल योग सुधारा, वस्त्र भूषण डार लोंच मुष्टी कर डारा॥१०॥ होय दिगंबर सिद्ध नमः कहि ध्यान सु लीनों, इंद्रादिक तब पूजि तीसरो मंगल कीनो। संयम धारत ज्ञान तूर्य प्रभुको तत छिण ही, एक महूरत मध्य भयौ भाख्यो सब तुम ही ॥ ११ ॥ केश पंचमोउदधि क्षेप निज थान गये सब, प्रभु पूरण कर योग पारणौ कर आये तब। नाना विधि तपघोर कियो चूरण करमन को, सो प्रभु होउ सहाय हरो दुख मेरे मनको ॥ १२ ॥ दोहा ॥ चौवीसों जिनराय के, मंगल परम रसाल। जो पढसी सुनसी सदा, पासी मोक्ष विशाल॥१३॥

ॐ ह्रीं तपः कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान कल्याणक पूजा स्थापना

॥ छंद रोला ॥ बाह्याभ्यंतर संग त्याग थिर शुक्ल ध्यान मैं, तिरसठ को क्षय पाय अनन्त चतुष्टय चिन मैं। समव शरण जुत देव दोष अष्टादश रहिता, कृपा सिंधु इत आय तिष्ठ सनहित अघ हरता।

ॐ ह्रीं ज्ञान कल्याणक प्राप्ताः श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति-जिनेन्द्रा अत्रावतरत अवतरत संवौषट्। अत्रतिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

गीता छंद तव जस सु उज्वल स्वच्छ शीतल त्रास प्याम बुझावनों, ताको सु पावन परम पावन नीर मिस कर आवनों। चौबीस जिन जगदीश शीष सुरेश नर भुवनेशके, ताके सु पद अरचत जगत विरचत सु परचत सु निधिके॥

ॐ ह्रीं ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि विरान्तेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

मिथ्यात नाश प्रकाश क्षायिक लब्धि आनंद घनतुही, ताके सु कारण ताप वारण गंध पावन जजतुही। चौबीस० ।चंदनं।

क्षतको जुक्षतकर पाय पद अक्षत सु अक्षत हो सही, निरइच्छ पदके अर्थ इह लायो सु अक्षत ढिग तुही। चौबीस०। अक्षतं।

तवनामतैं यह काम डरपै हरि हरा दिक वसि किये, इम जानि तव ढिग पुष्प लायो हरो मनमथ दुखदिये॥चौबीस॥ पुष्पं॥

वेदनी नास अवाधनिज आनंद अमृत असहो, सो हे चतुर आनन क्षुधा वारन करो मैं दुखित हों ॥ चौबीस ॥ नैवेद्यं॥

यह महा मोह प्रचंड नास सुज्ञान केवल निधि लई । ताके सु अंतर घट निरंतर द्यौ मुझे दीपग दई ॥ चौबीस० ॥ दीपं ॥

ध्याना न लें धन कर्म जारि सु धूम मिसि दशदिशि गये, हम कहैं टंकोत्कीर्ण श्रद्ध सुहेत हम धूप जु लये ॥ चौ० ।धूपं ।

यह अंतराय नसाय पाय सु लब्धि अनुपम सुखमई । ताके चहन सब अघदहन त्रिभुवन पती इह फल लई ॥ चौ० ॥ फलं॥

तुम भये अतुल अनंत अनुपम अचल अव्यावाध हो । सो अर्घले तव चरण पूजौं द्यो अनर्घ्य अगाध हो ॥ चौ० अर्घ्यं

फागुण इकादशि श्याम प्रात सु आदि प्रभु केवल ठई ।
गणि वृषभ सेन सु आदि चौरासी चतुर्विध संघलई ॥
चौतीस सहस सुवार लाख प्रमाण थिति केवल कहों ।
इक लाख पूर्वम घाट वर्ष हजार इक नमि अघदहों ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्णैकादश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री ऋषभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

पोष शुक्ल इकादशी अपरान्ह केवल अजित ही,
गणिसिंह सेन सु आदि नव्वै संघ चौविध इम लही ।
सहस तीस सु लाख वारे थिति अबैं केवल कही,
इक लाख पूर्वम घाट इक पूर्वांग द्वादश वर्ष ही ॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्लैकादश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीअजित जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

संभव चतुर्थि श्याम कार्तिक काल अपरान्हिक लह्यो,
गणि चारुदत्तरु आदि इक शत पांच ऊपर संघ कह्यो ।
लाख तेरे सहस तीस सु काल थिति केवल कही,
इक लाख पूर्वम घाट चव पूर्वांग चौदह वर्ष ही ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण चतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्रीसंभव जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पौष शुक्ल चतुर्दशी अपरान्ह अभिनन्दन लही,
गणिवज्र आदि सु तीन एक शत संघ चव लख चौदही ।
तीस सहस सु केवली स्थिति लाख पूर्वम घाटि है,
पूर्वांग वसु सू वर्ष अष्टादश नमो साम्राज है ॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल चतुर्दश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीअभिनंद जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

चैत शुक्ल एकादशी अपरान्ह केवल सुमति ही,
गणि चरम आदि सु सोल यकसत संघ चव लख चौदही,
पंचास सहस सु केवली थिति लाख पूर्वम घाट है,
पूर्वांग द्वादश वर्ष वीस नमौं नमौं सुख गम है ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्लै कादश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री सुमति जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ अडिल छंद ॥ पूनौ चैत सु पद्म प्रभू अपरान्ह ही, गणी वज्रवलि आदि ग्यार एकशत कही । लाख सु साढे पंदरह संघ थिति पूर्व लख, द्विवसु मित पूर्वांग मास षट घाट भख ।

ॐ ह्रीं चैत्र पूर्णमास्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

॥गीता छंद॥ श्री सुपारस छट्ठ फागुण असित अपरान्हिक लही, गणि चरम वलि आदिक सु नव्वै पांच चव संघ इम कही । सो सहस तीस सु लाख चौदै केवली थिति कहत ही, एक लाख पूर्व मैं घाट वर्ष सु नवरु बीस पूर्वांग ही ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण षष्ठयां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सातैं फाल्गुण कृष्ण अपरान्हिक सु चंद्र प्रभू सही, गणि दंडिकादि सु तीन नव्वै संघ चवलख चौदही । पुन सहस तीस सु केवली थिति लाख पूर्वम घाट है, पूर्वांग चवविस मास तीन कह्यो जिनेश्वर नाथ है ।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री चंद्र प्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

कार्तिक दुइज सित पुष्पदंत सु लयो केवल ज्ञान है, गणि गर्भ आदि कहे अत्यासी काल अपरान्हीक है । चव संघ बारे लाख अस्सी सहस केवल कहत तुव, एक लाख पूर्वम घाट पूर्वांग अट्ठाइस मास चव ।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पौष कृष्णा चतुर्दशी शीतल सु अपरान्हिक लह्यो, गणि अनागारादिक इक्यासी संगचव लख दश कह्यो। फुनि असी सहस सु केवली, थिति पूर्व सहस पचीस है, तामैं सु वन्हिप्रमि तघटाए मांस जजत यतीस है।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णचतुर्दश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीशीतल जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

माघ कृष्णा अमावसी श्रेयांस पूर्वान्हिक लह्यो, गणि कुंथु आदिक सत्तहत्तर संघ चव अठ लख कह्य । फुनिचार सहस सु केवली स्थिति लाख इकइस वर्ष है, तामैं सु मास घटाय दोय सु जजों तिनपद सर्म है।

ॐ ह्रीं माघ मावस्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांस जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

॥अडिल्ल छंद॥ वासुपूज्य दो इज सित माघ परान्ह के, गणि सुधर्म आदिक छांछट संगमांन के। सहस अट्ठत्तर लाख सात केवल सुनों, हीन मांस एक वर्ष लाख चौवन भनो।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल द्वितीयायां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीवासु पूज्य जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

॥जोगीरासा छंद॥ माघ सुदी छठि विमल जिनेश्वर अपरा- न्हिक मै पायो, गणी नंदरार्या दिक पचपन लख चार संघ

इमथायो। सहस इकहत्तर लाख सात अव केवल थिति भवि मानों, मास तीन कम वर्ष लाख पंदरह मैं तुव धुन गानों।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठयां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री विमल जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १३॥

चेत अमावस अपरान्हिक मैं श्री अनंत जिन पायो, गणि जयादि पंचास बताये संघ चारिविधि गायो। सहस चौरासी लाख सात गणि केवल मैं इमथाये, हीन मांस दुइ लाख सु साढे सात वर्ष मन भाये।

ॐ ह्रीं चैत्र मावश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री अनंत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १४॥

पूसार्जुन पूनौं अपरान्हिक केवल धर्म जिनेशं, गणि अरिष्ट आदिक तेतालिस चार संघनुत सेसं। लाख सात छब्बीस सहस फुन चार शतक धनुगाजं, हीन मांस इक वर्ष अढाई लाख केवल जिन राजं।

ॐ ह्रीं पौष पूर्णमास्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री धर्म जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १५॥

पौष दशैं अपरान्हिक केवल श्री प्रभु शांति जिनेशं, गणि-चक्रायुध आदि तीस छह संघ चारि कथितेसं। लाख सात बाईस सहस फुनि तीन शतक तुम गानं, केवल चौविस सहस शतक नव चवरासो वर्ष प्रमानं।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री शांति जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १६॥

॥ रोला छंद ॥ तीज चैतसित अपरान्हिक श्रीकुन्थुजिनेश्वर, गणि सु स्वयंभू आदितीस पच संघ चार गुरु । पांच लाख फुन सहस वीस सत साढे तीना, वत्सर तेइस सहस सतक साउजु चोतीना ।

ॐ ह्रींचैत्र शुक्ल तृतीयायां ज्ञान कल्याण प्राप्ताय श्री कुन्थु जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

सवैया ३१ का—कार्तिक शुकल दुवादशि अपरान्हिक केवल श्री अरह जिनंद, गणि श्री कुंथु नाम आदिक है तीस नमो सब सुख के कंद । लाख पांच अरु सहस दशैं सब संघ चार सेवत नितसंत, सहस बीस सत नव ऊपर चौरासी वर्ष धर्म वर्षंत

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल द्वादश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीअर-नाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

॥गीता छंद॥ पौष असित सुमल्लि केवल दूज पूर्वान्हिक लही, गणि विशाखाचार्य आदि सु अष्ट विंशत पद गही । संघ चार सहस पचान वे चार लाख प्रमाण है, केवल सहस चौपन सतक नव घाट दिन छह ज्ञान है

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण द्वितीया यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीमल्लि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

वैसाख नवमी असित अपरान्हिक सु मुनिसुव्रत लही, गणि-मल्ल आदि सु आठ दस चव संघ श्री जिन इम कही । सहस असी लाख चार सु देव पशु गण तीन ही, कम मास ग्यारा वर्ष साढे सात सहस सु थिति लही ।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण नवम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीमुनि सुव्रत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

॥ अडिल छंद ॥ मगहन सित एकादशि नमि अपरान्ह ही, केवल गणि सोमादि सात दश जानही । संघ चार चोलाख सहंस पैंसठ कही, चौबीस सतकरु कानवे वर्ष जु थित लही ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्लैकादश्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री नमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥

॥ गीता छंद ॥ आस्वनि सु प्रतिपद सेत पूर्वान्हिक सु केवल नेमिही, गणिग्यार वरदतादि चार सु संघ समव श्रुत लही । चार लाख हजार अट्ठावन सु केवल मैं रहे, वत्सर सतक सात जु म घाट पचास छह दिन तैं रहे ॥

ॐ ह्रीं अश्विन शुक्ल प्रतिपदायां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री नेमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

॥ अडिल छंद ॥ चैत्र चतुर्थी कृष्णा प्रात पारस प्रभू, गणधर दशमैंमुख्य स्वयंभू जिन विभू । संघ चार चौलाख सहस चौपन कही, सत्तर वर्ष सु हीन मास चउथित लही ॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री पार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

सित दशमी वैसाख परान्ह सु वीरजी, गौतम आदि गणेश इग्यारह धीरजी । संघ चार चौलाख सहस उनचास है, वर्ष तीस धर्मोपदेश भवितार है ॥

ॐ ह्रीं बैशाख शुक्ल दशम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री वर्द्धमान जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ चौथी सों भगवान के, तूर्य कल्याणक सार ।
मैं पूज्यों वसु द्रव्यले. पाऊं पद अविकार ॥

ॐ ह्रीं ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २५ ॥

जयमाला

॥ सोरठा ॥ होय दिगम्बर रुप, क्षपक श्रेणि फुनि मांडिकरि । भये संयोगी भूप, नमो तासु वसु अंग नम ॥१॥

पद्धडी छंद–जब प्रगट्यो जिन केवल सु भान, आसन कंप्यो सुर असुर जान। धनपति आज्ञा दीनी सुरेश, समवसृत आय रच्यो जिनेश ॥ २ ॥ इन्द्र हु परिवार समेत आय, जिन पूज भक्ति कीनी बनाय । नर खग पशु असुर नमे जिनाय, बैठे निज निज कोठे समाय ॥ ३ ॥ तव समवशरण लखि इन्द्र हर्ष, तसु किंचित वर्णन लिखौ पर्व। प्राकार नील मणि भूमसार, चहुं दिश शिवाण विस त्रिस हजार ॥ ४ ॥ तापै सु कोट धनु किधो आई, धूली साला पण रत्न भाई । चहुं दिश मैं मान स्थंभ चार, त्रै कोटरु कटनी धुजा सार ॥ ५॥ तामैं जिन बिम्ब विराज मान, सिंहासन छत्र चमर सुजान । तोरण द्वारन मंगल सुदर्व, कंचन रतनन मों खिचे सर्व ॥ ६॥ ताके चहुं दिस वापिका चार, माननि को मान गलत निहार।

ताके आगैं शालिका सार, पुष्पनि की वाडी दोउ पार ॥७॥
फिर दुतिय कोट कंचन सुवर्ण, गोपुर द्वारन तोरण सुधर्म।
अष्टोत्तर सत मंगल सु दर्व, द्वारन द्वारन निधि परी सर्व ॥८॥
तामैं नट शाला चहूं ओर, तहां नटै अपछरा विविध जोर।
तंह वन चारों दिसि सोभकार, चंपक अशोक आम्रादि चार
॥ ९ ॥ इक इक दिश वृक्ष सु चैत्य एक, जिन बिंबांकित
पूजत अनेक। फुनि त्रितिय कोट ताए सु हेम, ध्वज पंकति
तूप सु रत्न जेम ॥ १० ॥ चौथो जु फटिक मणि कोस
कोट, ताके मध द्वादश सभा गोट। चत्र कोट मध्य वेदिका
पांच, अंतर मैं नाना विविध गांच ॥ ११ ॥ कहुं मंदिर
पंकति शिला जोग, सामानिक गंध कुटी मंजोग। ताके मध
कटनी तीन राज, तापै ओ गंध कुटी जु छाज ॥ १२ ॥ तामैं
सिंहासन कमलसार, जिन अंतरिक्ष शोभै अपार। इत्यादिक
बर्णन को समर्थ, अब कहों छियालिस गुण सु अर्थ ॥ १३॥
जय जन्मत ही दश भये एह, बलनंत अतुल सुंदर सु देह।
जय रुधिर श्वेत अरु वचन मिष्ठ, शुभ लक्षण गंध शरीर
सिष्ठ ॥ १४ ॥ जय आदि संहनन संसथान, मल रहित पसेव
हु रहित मान। फुन केवल उपजे दश जु एम, विधेश्वर
सब चतुरानन नेम ॥ १५ ॥ आकाश गमन अदया अभाव,
दुरभिक्ष जु शत जो जन न पाव। अब इन पांचनसों रहित
देव, उपसर्ग केश नख वृद्ध सेव ॥ १६॥ टमकार नेत्र कवला

अहार, छाया अब सुर कृत दस सु चार। सब जीव मैत्रि आंनद लहांहि, अर्द्धमागधि भाषा सब फलांहि ॥ १७ ॥ दर्प्पन सम भू निरकंट शृष्टि, सौगंध पवन गंधोद दृष्टि। नभ-निर्मल अरु दश दिशहु जान, पद कमल रचत जय जय सुगान ॥ १८॥ वसु मंगल दर्वरु धर्म चक्र, अगवाणी सुरले चलत शक्र। अब प्राति हार्य वसु भेव मान, सिंहासन छत्र चमर सु जान ॥ १९ ॥ भामंडल दुंदुभि पहुप वृष्टि, दिव्य ध्वनि वृक्ष असोक सृष्टि। दरशन सुख वीरज ज्ञान नंत, तुम ही मैं ओरन ना लहंत ॥ २० ॥ अरु दोष जु अष्टादश कहेय, औरन मैं है तुम मैं न तेह। सो जन्म मरण निद्रारु रोग, भयमोह जग मदखेद सोग ॥ २१ ॥ विस्मैं चिंता पर स्वेदनेह, मलवैर विषेरति क्षुध त्रिषेह। सर्वज्ञ वीतरागता जेह, सो तुम मैं ओरन बनैं केह ॥ २२ ॥ तुमगो शासन अविरुद्ध देव, वाकी संसै एकांत भेव। तुम कह्यो अनेकांत स अनेक, यह स्याद्वाद हत पक्ष एक ॥ २३ ॥ सो नय प्रमाण जुत सधै अर्थ, सापेक्ष सत्य निरपेक्ष व्यर्थ। युक्ता गम परमागम दिनेश, वाकी निशि चोर इवाकु भेष ॥ २४ ॥ भविताराण तरण तुही समर्थ, इह जान गही तुव शरण अर्थ। मो पतित दोष पर चिंतन देहु, अपनी विरदा वलि मन धरेहु ॥ २५॥ हे कृपा सिंधु यह अर्ज धार, मै रोग तिमर मिथ्या निवार, मैं नमों पाय जुगलाय शीस, अब बेग उबारो हे जगीश २६

॥छंद॥ जय जय भवि तारक, दुर्गति वारक शिव सुख कारक विश्वपते । हे मम उद्धारक भवदधि पारक, अखिल सुधारक द्रिष्ट इते ॥

ॐ ह्रीं ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मोक्ष कल्याणक पूजा स्थापना

॥ छंद रोला ॥ आठों कर्म विनाश पाय गुण आठ अनंता, भए चिदानंद मग्न निरंजन नित्य सु संता । कृत कृत्य जु तन वात शीश जगदीश विराजै, ज्ञायक लोकालोक आय तिष्ठौ दुख भाजे ॥

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताः श्री वृषभादि वीरान्तचतुर्विंशति जिनेन्द्रा अत्रावतरत अवतरत संवौषट् । अत्रतिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

॥ रेखता ॥ हिमानी का लिया पानी समानी चंद सीतानी । दिया धारा जु हित सानी, निशानी सौख्य अमलानी । जजों चौवीस जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे, करो भव पार भव पारे सु भावा भाव कथ हारे ॥

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि विरान्तेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हरी चंदन केलि नंदन, घसौं आताप हरि कंदन । चढाऊं पद्म जग वंदन, लहो निर्वाण निर्फंदन । जजों चौवीस० ॥चंदनं॥

धरे अक्षत चरण आगें, निशापति किरण लज भागे। किधौंजो पुन्न तुम त्यागे, परो यह रास अति जागे ॥जजों चौवीस॥अक्षतं

सुमन अति सुमन से ल्याऊं, सुमन के सुमन से ध्याऊं । सु मन मथ को हरो पाऊं, निजानंदात्म गुण गाऊं। जजोंचौवीस पुष्पं

ये अक्षक पक्ष को क्षक, सुभक्षक स्वक्ष क्षुध नक्षक । धरौ नैवेद्य हे दक्षक, निकक्षक कर्म चित रक्षक।जजोंचौवीस। नैवेद्यं

चढाऊं दीपतम नाशै, उडै कज्जल रु परगासै। जो आवे नाथ के पासै, उरध ततकाल ही जासै ॥ जजों चौवीस ॥ दीपं ॥

तगर कृष्णागरु लेऊं, वरंगी वन्हि मैं खेऊं। उडै जो धूम्र इमवेऊं भगे अघ चरण तुव सेऊं। जजों चौवीस जिन प्यारे, अतुल निधि ज्ञान अविकारे, करो भव पार भव पारे, सु भावा भाव कथ हारे ॥ धूपं ॥

फलस दाडीम नारंगी, अभंगी पुंगि बहुरंगी। धरे ढिग चरण मनरंगी, लहै पद अचल निर संगी ॥जजों चौवीस ॥ फलं॥

जलादिक द्रव्य सब लीने, अर्घ जुत आरती कीने । हरौ आरत कृपा भीने, कटै जंजाल दुख दीने ।जजों चौवीस। अर्घ्यं

॥ छंद प्रतिमाक्षरा ॥ वदि माघ चारदश मुक्तिलियं, पद्मा सनस्थ दिन चौद कियं ।निरजोग आदि जु अष्टापद तैं, तै श्री मुनि अच्युत संघ मितैं ॥

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चतुर्दश्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री ऋषभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

॥ सुंदरी छंद ॥ अजित पंचमि सेत सु चैत की, खग्ग आसन सम्मेद जु थकी । मांस एक निरोधो जोगही, सहस मुनि संघ मुक्तित्रिया लही ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल पंचम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री अजित जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

॥ छंद नाराच ॥ सु चैत सेत छट्ट को समेदतैं गए सही, जिनेन्द्र संभवेस खग्ग आसने शिवा लही । सुमास एक जोग को निरोध के प्रबुद्ध ही, हजार एक और श्री मुनीन्द्र संघ सिद्ध ही ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल षष्ठ्यां निर्वाण कल्याण प्राप्ताय श्री संभव जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुंदरी छंद ॥ सित सु माघ व छट्ठ समेद तैं, खग्ग आसन मास निरोध तैं । अचल श्री अभिनंदन जिनभये, सहस्र एक मुनीश्वर जुत ठये ।

ॐ ह्रीं बैशाख शुक्ल षष्ठ्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री अभिनंद जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

मधु एकादशि सुमति समेदतैं. उरध आसन मुक्ति अजोगितैं । मास एक निरोधेजोग कों, सहस संघ जतो पद सेतकों ।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्लैकादश्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री सुमति जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

असित फागुण चौथ सु पद्महो, ऊर्द्ध आसन अष्टमि भू लही।
गिरि सम्मेद जु मास निरोध के, शत अट्ठतिस मुन जुत सोध के।

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण चतुर्थ्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ छंद रुप चौपाई ॥ फागुण असित सुपार्श्व सातैं, गिरि सम्मेद आसन खग गातैं। रोधे जोग मास इक पाई, मुक्त सहस मुनि जुत ठकुराई।

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण सप्तम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्रीसुपार्श्व जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

चंद्र प्रभू फागुण सित सातैं, कायोत्सर्गा सन गिर बातैं। रोधे जोग मास इकपाई, मुक्त युक्त मुन सहस इकाई ॥

ॐ ह्रीं फागुण शुक्ल सप्तम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

पुष्प दंत भादों सित आठें, गिर समेद खगासन गाठें। मास येक रोधे शिवपाई, बंदौं सहस मुनन जुत राई।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्लाष्टम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

शीतल सित अश्वनि अठ जानों, खग्गा सन समेद तैं मानों।
समव शरण विघट्यो इक मासा, सहस श्रवण जुत शिवपुर वासा

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्लाष्टम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री शीतल जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

श्री श्रेयांस सेत नम पूनो, गिर समेद खागा सन मूनो। रहित जोग तैं एक जु मासा, सहस जती जुत मुक्त निवासा।

ॐ ह्रीं श्रावण पूर्णमास्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्रीश्रेयांस जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

वासु पूज्य चौदम सित पाई, पद्मासन चंपापुर भाई। मास एक भादों निर जोगी, सहस मुनी जुत शिव सुख भोगी ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

अष्टमि असित असाढ समेदं, विमल विमल पद मास अजोगं। खग्गा सन तैं मुनिजुत जानौं, शत छासठ बारह परमानो ॥

ॐ ह्रीं आषाढ कृष्णाष्टम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री विमल जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

चैत अमावस शिखर समेदं, खगासन अनंत निरषेदं। मास एक मुनि जुत शिव भूपं, पचहत्तर सत सात अरुपं ॥

ॐ ह्रीं चैत्र अमावस्यां निर्वाण कल्याण प्राप्ताय श्री अनंत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

॥मोतीदाम छंद॥ सु जेठ सिते चौथी जिन धर्म, समेद गये खरगासन पर्म। रहे इक मास अयोग मुनीस, लिये सत आठरु एक जगीस।

ॐ ह्रीं जेष्ठ शुक्ल चतुर्थ्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री धर्म जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा ॥ १५ ॥

सु जेठ चतुर्दशि कृष्ण समेद, गये खरगासन शांति अवेद। कियो इक मास सु जोग निरोध, मुनीस तनौं जु तभै अविरोध।

ॐ ह्रीं जेष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्रीशांति नाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

सु माधव एकम कुंथु मुसेत, समेद महश्र मुनीम समेत । रहे इक मास अजोग जिनेश, लये खरगासन मुक्ति गणेश ।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल प्रतिपदायां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री कुंथु जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

॥त्रोटक छंद॥ वदि चत अमावस श्री अरहं, इकमास सु जोग कियो विरहं खरगासन तैं मुन जी सहसं, जुतपाय समेद जुते सुवसं

ॐ ह्रीं चैत्र अमावस्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री अर जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

॥छंद लोलतरंग॥ फागुण की सित पंचम मल्लं, आसन खर्ग समेद अकल्लं । मास इके रूध जोग जिनेन्द्रं, पांच सते मितसंघ मुनीन्द्रं

ॐ ह्रीं फागुण शुक्ल पंचम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री मल्लि जिनेन्द्रायार्घ्यं निवपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

॥अडिल छंद॥ श्री मुनिसुव्रत फागुण कृष्णा दुवादशी, गिरि समेद तैं जाय मिले शिवतिय हसी । आमन कायोत्सर्ग मास इक थितिठये, अनगारी इक संहस संग सास्वत भये ।

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण द्वादश्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री मुनि- सुव्रत जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥

चौदसि श्री नमिनाथ श्याम वैशाख ही, गिर समेद तैं मोक्ष सु थान विराज ही । पद्मासन इक मास निरोधे जोगकौं, सहस एक मुनि संघ नमों मल धोइकों ।

ॐ ह्री वैशाख कृष्ण चतुर्दश्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री नमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥

॥वसंत तिलका छंद॥ असाढ मास तिथि सात सु सेत जानों श्री नेमिनाथ गिरि उर्ज जयंत मानो। खरगासनस्थ धरि योग सु एक मासं, श्री संघ पांच शत छत्तिस जागिरासं ॥

ॐ ह्रीं आषाढ शुक्ल सप्तम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री नेमि जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

॥छंद भुजंग प्रयात॥ सुदी श्रावणी की जु साते वखानी, भये पास सम्मेद तैं मुक्ति थानी खड़ा आसनस्थं रहे एक मासं, मुनि संत सै पांच छत्तीस भासं।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री पार्श्व जिनेन्द्रयार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

कार्तिक वदि मावस वीरं, पावा पुर तैं भवतीरं। खरगासन चौदे दीना, रहि छत्तिस मुनि संघ कीना।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावश्यां निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री वर्द्धमान जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ चौवीसों जिनराज रवि, भविक मोद सुख कार।
मैं पूजों वसु दर्व ले, नित प्रति मंगलकार।

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्त श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाला

॥ दोहा ॥ समव शरण मैं विश्वपति, कियौ विश्व व्याख्यान।
मिट्यो जगत मिथ्यात सब, फुनि पहुंचे निर्वान ॥

॥ पद्धरी छंद ॥ जय घाति प्रकृति त्रेसठ संजोगि, दो समय पिच्यासी चय अयोगि। परमोदारिक तै गये मुक्त, जिमि मूस मांहि आकाश शुक्त ॥ २ ॥ इक समय मांहि ऊरध स्वभाव, जिमि अग्नि शिखातन अंत चाव। जलमच्छ इव सहकारीन धर्म, आगैं केवल आकाश पर्म ॥३ ॥ साकार निराकारो व भाम, सहजा नंद मग्न सु चिद विलास। गुण आठ आदि राजै अनत, गण धर से कहतन लहत अंत ।४। चेतन परदेसी अस्त व्यस्त, परमेय अगुरु लघु दर्वसस्त। अरु अमूरतीक सु आठ येव, ये वस्तु स्वभाव सदैव तेव ।५। अब गुरु पर्यय के भेद दोय, इक व्यंजन दुसरो अर्थ होय। सो प्रथम अयोगा देहकार, परदेश चिदानंद को निहार ॥६॥ अब अर्थ अगुरु लघु गुण सु द्वार, षट गुणी हानि वृधनिज सु सार। सो समय समय प्रति यहो भांत, जिमिजल किलोल जल मैं समात ॥ ७ ॥ इह भांत सु तव गुण पर्ज्ज दर्व, हो ध्रोव्योत्पाद व्ययात्म सर्व। यह लोक भरो षट दर्व से जु, तिनको गुण पर्जय समय के जु ॥ ८ ॥ सो होत अनंतानंत जान, स्वाभाव विभाव सु भेद मान। जेते त्रैकाल त्रिलोक के जु, इक समय मांहि जुग पत लखेजु ॥ ९ ॥ हस्तामल

इव दर्पण सु भाव, अक्षय सु उदासीनता भाव । तब इन्द्र ज्ञान तैं मुक्ति जान, आयो पंचम कल्याण थान ॥१०॥ चारों विध देव सु सपरिवार, निज वाहन जुवति उछाह धार। तब अग्नि कुमार के इन्द्र ठाढ, निज मुकुट मांहि तैं अनल काढ ॥ ११ ॥ कीनों जिन तन संस्कार सार, सौधर्म इन्द्र अति हर्ष धार । फुन पूज भस्म मस्तक चढाय, सब देव हु निज निज शीश लाय ॥ १२ ॥ करि चिन्ह थान निज गये थान, फुनि पूजे मुनि जन खग सु आन । तुम भये सु आदि अनंतदेव, अनुपम अबाध अज अमर सेव ॥ १३ ॥ मैं पर्यो चतुर्गतिवन सु मांहि, दुख सहे सो तुम से छिपे नांहि । तुम करुणा निधि निज वान धार, संसार खार तैं तार तार १४ ॥घत्ता नंद छंद॥ जय जय जग सारं, विगत विकारं करुणागारं शिव कार । मम करु निरवारं, हे प्रणधारं चिद्व्यापारं दातारं ॥

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥समुच्चय महार्घ्यं-शिखरणी छंद॥ सुणो ज्ञानी प्राणी जगत हित दानी सु जिन है, ज जे है जे जीवा त्रिविध विध सों कर्म दल है । लिये दर्व सर्व शुचि अनुपमं अष्टविध जे, लहैं भुक्ति मुक्ति परमपद सुक्ति भव तुमे ॥

ॐ ह्रीं पंच कल्याणक प्राप्त श्री वृषभादि विरान्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

॥ छंद रोला ॥ चौवीसों जिनराज भविक पूजै मन लाई, तिनके पुत्र कलित्र पौत्र आरोग्य वधाई । सुजस कांत धन धान्य होय दुख लेस न कोई, उच्च सुलभ पद सर्व अनु क्रम शिव पद होई ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ सवैया ॥ काशी देश वणारसि नगरी जन्म क्षेत्र तीर्थंकर च्यार, श्री सुपार्श्व अरु चंद्रप्रभू श्रेयांस पार्श्व जिन भवि भवतार । तँह सज्जन साधर्मी बहु जन भैरों दास मंद मति धार, अग्रवाल सुत छोटीलाल जु मीत्तल गोत रचो हित धार ॥ दोहा ॥ संवत विक्रम दित्य के उगणी सो सतरा जान, भादौं शुक्ल त्रयोदशी पूरण पाठ प्रमान ॥ इतिसंपूर्ण॥

॥ भजन ॥

स्वामीजी तुम गुण अपरंपार, चंद्रोज्वल अविकार ॥ टेक ॥
जबैं प्रभु गर्भ मांहि आये, सकल सुरनर मुनि हर्षाये ।
रतन नगरी मैं वर्षा ये, अमित अमोघ सुधार ॥ स्वामी० ॥ १ ॥
जनम प्रभु तुमने जब लीना, न्हवन मंदिर पर हरि कीना ।
भक्ति सुर शची सहित भीना, बोले जय जय कार ॥ स्वामी० ॥२॥
अथिर जग तुमने जब जाना, अस्तवन लौकांतिक ठाना ।
भये प्रभु जती नगन बाना, त्याग राज को भार ॥ स्वामी० ॥३॥
घातिया प्रकृति जबैं नाशी, लोक अरु अलोक परकासी ।
करी प्रभु धर्म वृष्टि खासी, केवल ज्ञान भंडार ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥
अघातिया प्रकृति जु विघटाइ, मुक्ति कंथा जब ही पाइ ।
निराकुल आनंद सुख दाई, तीन लोक शिरताज ॥ स्वामी० ॥ ५॥
चरण मुनिजन तुमरे ध्यावैं, पार गणधर हू नहिं पावैं ।
कहां लग 'भागचंद' गावैं, भव सागर सै तार ॥ स्वामी० ॥ ६ ॥